कसौटी पर चलना

यह आलेख सामान्य अध्ययन प्रश्न-पत्र-II (अंतर्राष्ट्रीय संबंध) से संबंधित है।

द हिन्दू

लेखक - अनिता इंदर सिंह (प्रोफेसर, सेंटर फॉर पीस एंड कॉन्फ्लिक्ट रेजोल्यूशन, नई दिल्ली)

30 नवम्बर, 2018

''भारत को ईरान से तेल आयात और चाबहार पर अमेरिकी छूट से सतर्क रहना चाहिए।''

यू.एस. द्वारा भारत को दी गई प्रतिबंधों पर छह महीने की छूट और सात अन्य देशों को ईरान से तेल आयात करने पर छूट भारत-यू. एस. रणनीतिक साझेदारी में आर्थिक कारकों के महत्व पर प्रकाश डालता है। यह छूट अर्थशास्त्र और रणनीति के बीच के लिंक पर भी प्रकाश डालती है।

कोई विशेष उपचार नहीं

हांलाकि, यह छूट भारत को एक प्रकार से थोड़ी राहत और भारत-यू.एस. संबंध को बनाए रखने में मदद करती है, लेकिन अमेरिका ने भारत को कोई विशेष राहत प्रदान नहीं किया है। ऐसा इसलिए क्योंकि चीन, जो भारत का मुख्य एशियाई प्रतिद्वंद्वी और यू.एस. द्वारा अपने मुख्य सुरक्षा खतरे के रूप में माना जाता है, अमेरिका ने इसे भी छूट दी है। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने इस संदर्भ में कहा है कि वह वैश्विक तेल की कीमतों में सदमे की वृद्धि से बचने के इरादे से ही प्रतिबंधों पर धीमी गति से चल रहा है।

छूट से पता चलता है कि वाशिंगटन और नई दिल्ली भारत के तेल और गैस की जरूरतों पर सहयोग करेगी। दरअसल, उनकी सामरिक ऊर्जा भागीदारी (अप्रैल, 2018) 'द्विपक्षीय संबंधों में एक केंद्रस्थल' के रूप में सेवा करने वाले ऊर्जा सहयोग को देखती है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि यू.एस. का मानना है कि वह दुनिया का तेल और गैस का अग्रणी उत्पादक है।

नवंबर 2017 की यू.एस. राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति ने 'ऊर्जा प्रभुत्व - वैश्विक ऊर्जा प्रणाली में अग्रणी निर्माता, उपभोक्ता और नवप्रवर्तक के रूप में अमेरिका की केंद्रीय स्थिति' के महत्व पर प्रकाश डाला है। भारत को ट्रम्प प्रशासन की इच्छा के बारे में कोई भ्रम नहीं होना चाहिए क्योंकि अमेरिका प्रमुख ऊर्जा बाजार बनना चाहता है।

वास्तव में जब से श्री ट्रम्प राष्ट्रपति बने हैं, तब से अमेरिका से भारत में तेल निर्यात बढ़ गया है। 2017 में, भारत ने अमेरिकी कच्चे तेल के 8 मिलियन बैरल आयात किए। इस जुलाई तक इसने यू.एस. कच्चे तेल के 15 मिलियन से अधिक बैरल आयात किए थे।

लेकिन, अमेरिका के ऊर्जा प्रभुत्व के बारे में ऐसा दावा किया जाता है कि उसने आज के वैश्विक ऊर्जा बाजार की परस्पर निर्भर प्रकृति को नजरअंदाज कर दिया है। अनजाने में, भारत को अमेरिका और ईरान दोनों की मदद की जरूरत है। अमेरिका भारत का मुख्य रणनीतिक साझेदार है। दरअसल, अमेरिकी नौसेना शक्ति हिंद महासागर और दक्षिण चीन सागर में समुद्री स्वतंत्रता और सुरक्षा को संरक्षित करने के लिए अनिवार्य है।

ईरान के साथ संबंध

साथ ही, राजनीतिक रूप से स्थिर ईरान के साथ मित्रवत संबंध निस्संदेह भारत के अनुरूप हैं। लेकिन ईरान के साथ वाणिज्यिक और राजनीतिक संबंधों को सुदृढ़ करना एक मुश्किल चढ़ाई है। वर्ष 2009 में, अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी ने मांग की थी कि ईरान यूरेनियम संवर्द्धन को रोक देगा। भारत ने भी यह स्पष्ट कर दिया कि वह ईरान की परमाणु हथियार महत्वाकांक्षाओं का समर्थन नहीं करता है और इसलिए उसने इसके खिलाफ मतदान किया है।

एक और स्तर पर, भारत ने कई वर्षों में ईरान के साथ द्विपक्षीय व्यापार घाटा हुआ है। 2017 में यह 8.5 अरब डॉलर था। रुपये में तेल के लिए भुगतान करने का भारत का प्रस्ताव ईरान के लिए अप्रिय रहा है। तेहरान अपने तेल के लिए रुपये के भुगतान की स्वीकृति देने के लिए पर्याप्त भारतीय सामान नहीं खरीदना चाहता। लेकिन अमेरिकी डॉलर के अलावा किसी भी मुद्रा का उपयोग करने का मतलब यह होगा कि नकद की कमी से जूझ रहे ईरान को भारत को और अधिक क्रेडिट देना होगा। इसलिए दोनों देशों को इस उधेड़बुन से बाहर निकलने के लिए नए राह खोजने होंगे।

सुरक्षा मोर्चे पर, ईरान के साथ भारत के सहयोग को पाकिस्तान और चीन के साथ अपने क्षेत्रीय प्रतिद्वंद्वियों के व्यापक संदर्भ के खिलाफ देखा जाना चाहिए। भारत और ईरान क्षेत्रीय हितों को साझा करते हैं। वे अफगानिस्तान, मध्य एशिया और पश्चिम एशिया पर केंद्रित रणनीतिक साझेदारी बना सकते हैं।

रूस और कुछ अन्य देशों के साथ, वे ईरान का उपयोग रूस और उत्तरी यूरोप के व्यापार मार्ग के रूप में अंतर्राष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारा (आईएनएसटीसी) समझौते के लिए हस्ताक्षरकर्ता हैं। आईएनएसटीसी पारगमन मार्ग भारत को समुद्र के माध्यम से माल निर्यात करने के लिए शत्रु देश पाकिस्तान से उपमार्ग के सहारे जाने में सक्षम बनाता है।

यही कारण है कि भारत ईरान और अफगानिस्तान के माध्यम से मध्य एशिया से जुड़ने के लिए रणनीतिक बोली में दक्षिणी ईरान में चाबहार बंदरगाह का विकास कर रहा है। चाबहार ने युद्ध-ग्रस्त अफगानिस्तान को भारतीय वस्तुओं और ईरानी तेल के लिए एक महत्वपूर्ण लिंक प्रदान किया है। दिसंबर, 2017 में भारत ने बंदरगाह के माध्यम से अफगानिस्तान में गेहूं का पहला शिपमेंट बनाया।

भारत के चाबहार के विकास के लाभ को समझते हुए, अमेरिका ने कुछ प्रतिबंधों से भारत को छूट भी दी है ताकि वह बंदरगाह पर प्रगति कर सके। बंदरगाह के लिए प्रतिबंध राहत राजनीति और अर्थशास्त्र के मिश्रण से प्रेरित है। वाशिंगटन अफगानिस्तान में विकास और मानवतावादी राहत कार्यों में चाबहार की उपयोगिता को देखता है। यू.एस. यह भी जानता है कि चाबहार बंदरगाह के विकास में चीन की हिस्सेदारी है और यदि भारत इसमें अपना पैर जमाएं रखने में असमर्थ रहा तो चीन आसानी से बाजी मार सकता है।

इसके हिस्से में, ईरान बंदरगाह के निर्माण में उत्सुकता से रूचि दिखा रहा है। चाबहार, दक्षिण और मध्य एशिया में चीन, भारत और रूस के बीच प्रतिस्पर्धा से संबंधित है, इसलिए इसपर नियंत्रण सभी के लिए काफी महत्वपूर्ण है।

हम जानते हैं कि परमाणु हथियार क्षमता हासिल करने के लिए भारत-ईरान के कथित प्रयासों का विरोध करता रहा है। भारत के आर्थिक और सामरिक हितों पर गंभीर परिणामों के साथ एक परमाणु शक्ति संपन्न राष्ट्र ईरान पश्चिम और मध्य एशिया में सत्ता के संतुलन को बाधित कर सकता है। लेकिन ईरान के साथ एक मजबूत संबंध पश्चिम और मध्य एशिया में भारत का प्रभाव बढ़ाएगा और साथ ही यह चीन का मुकाबला करने में भी मद्द कर सकता है।

अप्रिय मुद्दों के कारण चर्चा में रहने वाले श्री ट्रम्प की प्रवृत्ति के बावजूद, भारत अब तक यू.एस.-ईरान रणनीति-अर्थशास्त्र कसौटी पर चल रहा है और यह भारत के लिए कसौटी पर खड़ा उतरने का सही मौका है।

GS World टीम...

भारत-अमेरिका संबंध

चर्चा में क्यों?

- हाल ही में ईरान पर अमेरिका द्वारा लगाए गए कई प्रतिबंधों के बावजूद उस देश से तेल खरीदने पर अमेरिका ने पाबंदी नहीं लगाने की घोषणा की है।
- अमेरिका के इस कदम को उन देशों के लिए बड़ी राहत के तौर पर देखा जा रहा है जो ईरान से तेल खरीदने को इच्छुक थे।
- भारत, ईरान से कच्चे तेल का चीन के बाद दूसरा सबसे बड़ा खरीदार है। लेकिन अमेरिका की चेतावनी के बाद भारत अब ईरान से कच्चे तेल की खरीद को सालाना डेढ़ करोड़ टन तक सीमित रखना चाहता है।
- इससे पहले 2017-18 में भारत की ईरान से तेल खरीद दो करोड़ 26 लाख टन यानी चार लाख 52 हजार बैरल प्रतिदिन के स्तर पर रही।
- भारत, जापान और दक्षिण कोरिया सहित आठ देशों को ईरान से तेल आयात करने पर प्रतिबंध से छूट दी गई है। अन्य देशों के नाम सोमवार को जारी किए जाएंगे।

क्या है पूरा मामला?

- जुलाई, 2015 में ईरान और संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के 5 स्थायी सदस्यों के बीच परमाणु समझौता हुआ था।
- अमेरिका के तत्कालीन राष्ट्रपति ओबामा ने समझौते के तहत ईरान को परमाणु कार्यक्रम को सीमित करने के बदले में बैन से राहत दी थी। लेकिन मई, 2018 में ईरान पर ज्यादा दबाव बनाने के लिए अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ये समझौता तोड़ दिया।
- ट्रंप ने ईरान में कारोबार कर रही विदेशी कंपनियों को निवेश बंद करने के लिए कहा था। अमेरिका ने भारी जुर्माने की भी धमकी दी थी और ईरान से कच्चे तेल को खरीदने वाले देशों को 4 नवंबर तक आयात बंद करने को कहा था।

भारत-ईरान

- भारत-ईरान से कच्चे तेल का चीन के बाद दूसरा सबसे बड़ा खरीदार है।
- भारत अब ईरान से कच्चे तेल की खरीद को सालाना डेढ करोड़ टन तक सीमित रखना चाह रहा है।
- इससे पहले 2017- 18 में भारत की ईरान से तेल खरीद दो करोड़ 26 लाख टन यानी चार लाख 52 हजार बैरल प्रतिदिन के स्तर पर रही।

भारत के लिए अहम क्यों?

- नई दिल्ली ने अपनी अर्थव्यवस्था और मुद्रास्फीति के प्रतिकूल प्रभाव के कारण ईरान से तेल आयात जारी रखने पर दबाव डाला था।
- सितंबर में भारत-यूएस 2 + 2 वार्ता के दौरान, अमरीका ने भारतीय पक्ष से कहा कि भारतीय अर्थव्यवस्था को नुकसान पहुंचाना खुद वाशिंगटन के हित में नहीं है।
- उस समय विदेश मंत्री सुषमा स्वराज और माइक पोम्पियो ने ईरान से तेल आयात जारी रखने के मुद्दे पर चर्चा की थी।
- भारत दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा तेल उपभोक्ता है। भारत के कच्चे तेल की कुल जरूरतों का 85 प्रतिशत और प्राकृतिक गैस की आवश्यकताओं का 34 प्रतिशत आयात से पूरा किया जा रहा है।

GS World Committed To Excellence

अंतर्राष्ट्रीय उत्तर दक्षिण परिवहन गलियारा

क्या है?

- आईएनएसटीसी 7,200 किमी लंबा जमीनी और सामुद्रिक रास्ता है।
- इसमें परिवहन के रेल, सड़क और समुद्री मार्ग शामिल हैं। इसके जरिए समय और लागत में कटौती कर रूस, ईरान, मध्य एशिया, भारत और यूरोप के बीच व्यापार को बढ़ावा दिए जाने का लक्ष्य है।
- इस नेटवर्क से यूरोप और दक्षिण एशिया के बीच व्यापारिक गठजोड़ में तेजी एवं ज्यादा कुशलता की उम्मीद की जा रही है।
- फेडरेशन ऑफ फ्रेट फॉरवार्डर्स असोसिएशंज ऑफ इंडिया के सर्वे में सामने आया कि मौजूदा मार्ग के मुकाबले आईएनएसटीसी 30 प्रतिशत सस्ता और 40 प्रतिशत छोटा रास्ता होगा।

पृष्ठभूमि

- इस अंतर्राष्ट्रीय कॉरिडोर की परिकल्पना को सितंबर, 2000 में आगे बढ़ाया गया था, जब सेंट पीटर्सबर्ग में इसको लेकर कुछ देशों के बीच सहमति बनी।
- साल 2005 से 2012 तक इस परियोजना के विकास को लेकर रफ्तार काफी मंद रही थी। इस बारे में 2013 में पहला ड्राई रन संचालित किया गया।
- इस वर्ष अप्रैल में इस परियोजना को आगे बढ़ाने की पहल की गई है।
- विदेश मंत्रालय से प्राप्त जानकारी के मुताबिक, 18 मई 2017 को भारत से रूस तक आईएनएसटीसी-एक्सप्रेस कॉरिडोर के विषय पर विभिन्न पक्षों की सहभागिता वाले सम्मेलन में इसके संभावित मार्गों, इसे लोकप्रिय बनाने के उपायों, चाबहार बंदरगाह के अधिकतम उपयोग और इस बहुपक्षीय गलियारे से जुड़े मुद्दों पर चर्चा की गई।
- आईएनएसटीसी उन गलियारों में एक है जिन्हें भारत चीन के 'वन बेल्ट वन रोड' नीति के सामानांतर बनाने पर काम कर रहा है।

संभावित प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

1. हाल ही में चर्चा में रहे 'आईएनएसटीसी परागमन मार्ग' के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:-
   1. इसके अंतर्गत जमीनी मार्ग के साथ-साथ सामुद्रिक मार्ग को भी शामिल किया गया है।
   2. यह मार्ग एशिया-यूरोप-उत्तरी व दक्षिणी अमेरिका के बीच व्यापारिक आर्थिक व्यवस्था को प्रोत्साहित करेगा।

   उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन असत्य नहीं है/हैं?

   (a) केवल 1 (b) केवल 2
   (c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1, न ही 2

संभावित प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

प्रश्न: हाल ही में अमेरिका ने भारत को ईरान से तेल आयात करने के संबंध में छूट प्रदान की। यह छूट भविष्य में भारत के लिए किस प्रकार लाभकारी साबित हो सकता है? चर्चा कीजिए। (250 शब्द)

नोट : 29 नवम्बर को दिए गए प्रारंभिक परीक्षा (संभावित प्रश्न) का उत्तर 1(a) और 2(b) होगा।